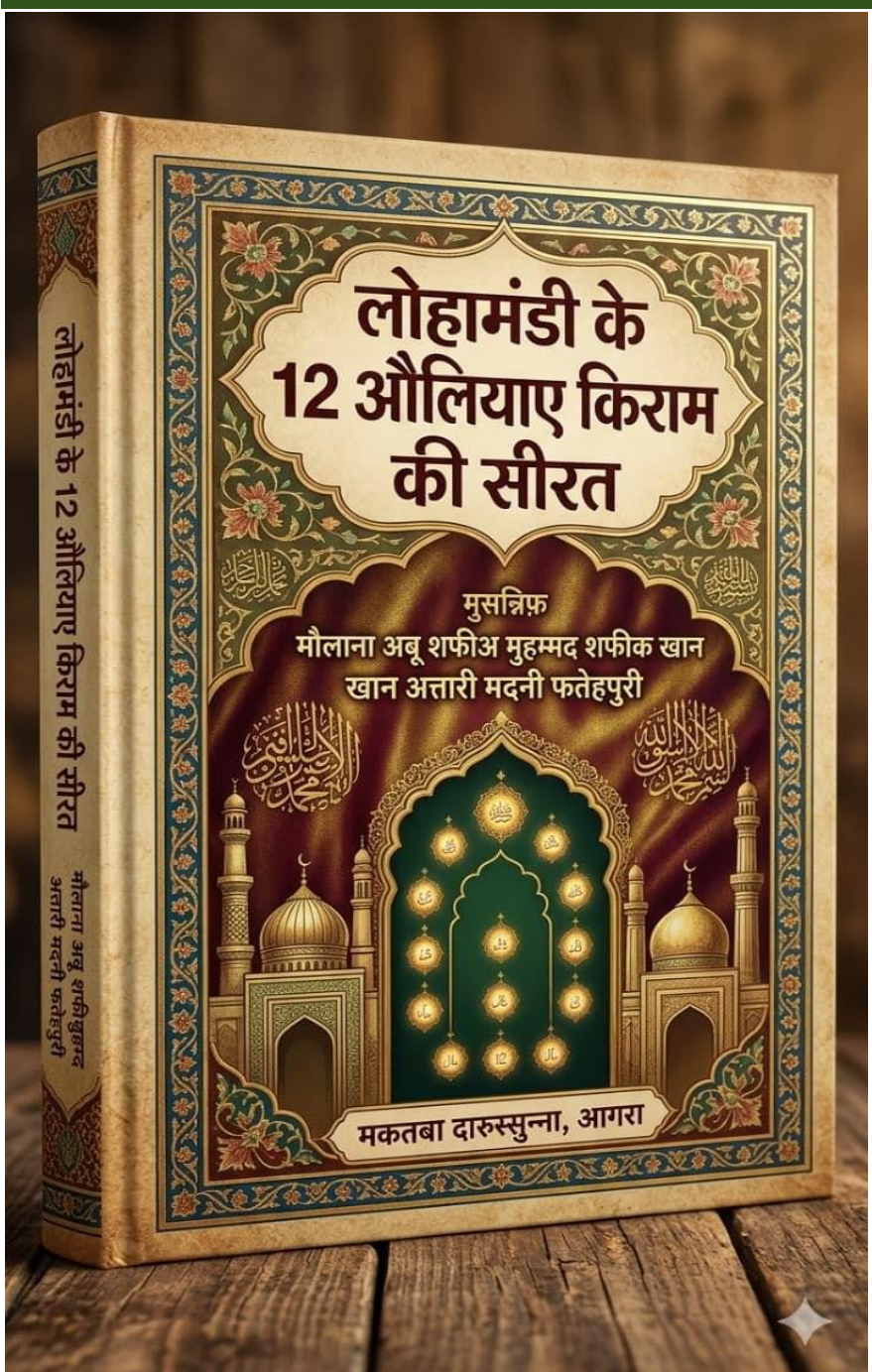
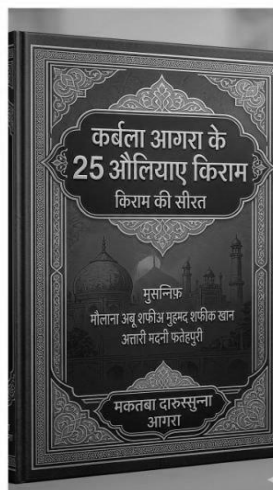
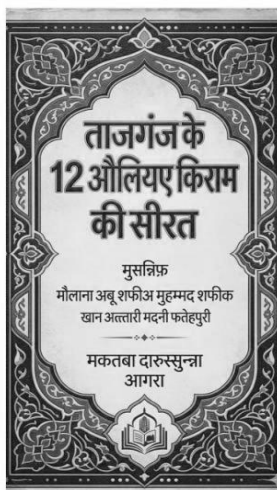
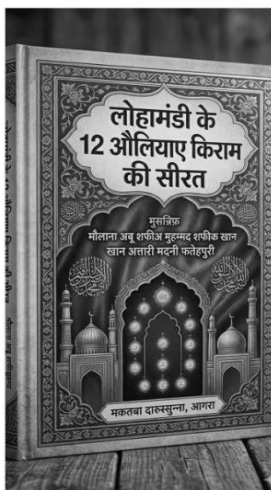
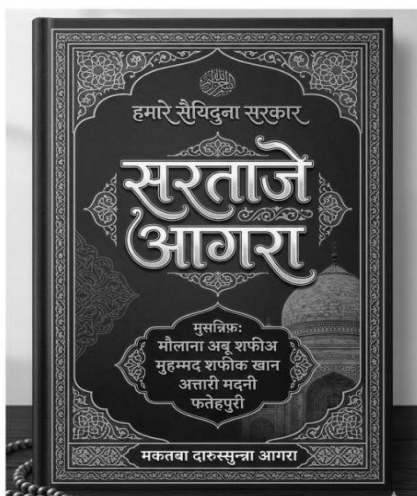
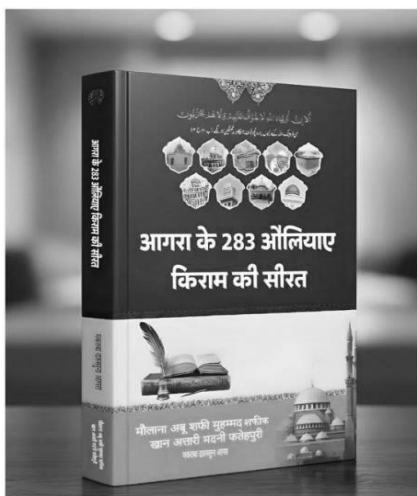




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत **मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'जमगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'जमगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफ़ीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा ये है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूजात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्गानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिशत अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फ़त्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर ग़ैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में ग़ैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिशती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 **सदकए जारिया का बेहतरीन मौका** 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत **700 रुपये** रिआयती कीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

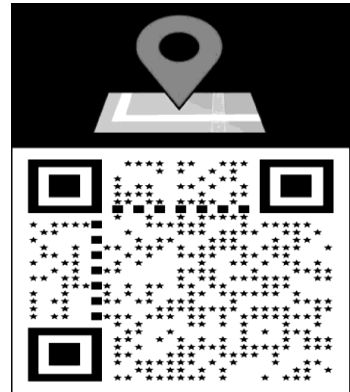
लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत बिल्लोच पुरा (लोहामंडी)

(1) अहमद शाह नक्रशबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह तेरहवीं सदी के आखिरी दौर में एक साहिबे निस्बत बुजुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह मुहब्बते इलाही में हर वक़्त मस्त रहते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात और खिरके आदात की अक्सर रिवायतें मशहूर हैं।

मज़ार मुबारक मुहल्ला बिल्लोच पुरा में वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा मुहब्बत शाह साहिब जो एक साहिबे हाल और ख़ुदा शनास बुजुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के जानशीन हुए थे, वो भी आप रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब ही आसूदा हैं यानी उनका मज़ार मुबारक भी अहमद शाह नक्रशबंदी के क़रीब मुहल्ला बिल्लोच पुरा में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज43)

अहमद शाह नक्रशबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



लोहा मंडी

(2) यतीम शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने कमालात को मुखन्नों के लिबास में छुपा रखा था, मुखन्नों की सोहबत में रहते और यतीमा के नाम से मशहूर थे, एक साल आगरा में बारिश नहीं हुई कहत साली के खौफ से वक़्त का हाकिम और रिआया सब परेशान और उस ज़माने के तमाम बुजुर्गों से बारिश के वास्ते दुआ के मुलतजी थे, मीर बाक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के हम असर यानी ज़माने के थे लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह का पता बताया कि अगर वो साहिब दुआ फरमा देंगे तो बारिश ज़रूर होगी। सब लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को तलाश कर के हाज़िरे ख़िदमत हुए, पहले आप रहमतुल्लाह अलैह बहुत नाज़ो नख़रों से लोगों को टालना चाहा मगर जब लोग किसी तरह ना माने और आप रहमतुल्लाह अलैह का पीछा ना छोड़ा तो बोले: ख़ुदा करे जिस मोए ने मेरा पता बताया हो उस की क़ब्र पर गधे लौटें। आख़िरे कार एक टीले पर चढ़ गए और एक पत्थर उठा कर बोले पानी बरसा वर्ना अभी चूड़ियां तोड़े डालती हूँ। ख़ुदा की क़ुदरत से उसी वक़्त ख़ूब बारिश हो गई और खेती का कारोबार शुरू हो गया, येह करामत देखकर लोग बहुत ग़िरवीदा हुए, हाकिमे वक़्त ने कुछ रुपया बतौर नज़र इरसाल किया यानी भेजा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया, आख़िरे कार इस रुपया से एक आलीशान लाल पत्थर की मस्जिद बना दी गई जो मुहल्ला लोहामंडी में अब तक मौजूद और मस्जिद मुखन्नसान के नाम से मशहूर है।

इस वाकिये के चंद ही रोज़ बाद आप रहमतुल्लाह अलैह का इंतिक़ाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक उसी मस्जिद के नीचे

वाक़ेअ है, मीर बाक़ी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की वीरानी को लोग इसी बददुआ का नतीजा समझते हैं, वल्लाह आलम बिस्सवाब ।

(बोस्ताने अख्यार, पेज251.252)

मुहल्ला गुड़िया अलहद्दाद,लोहामंडी

(3) शैख अलहद्दाद क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के खुदा शनासाने बा कमाल में से थे 1078 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई, मज़ार मुबारक मुहल्ला गुड़िया अलहद्दाद मुत्तसिल लोहामंडी में वाक़ेअ है । (बोस्ताने अख्यार, पेज50)

वज़ीरपुरा

(4) अमीर तपां चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम शैख हमीद है चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा अपने सामने एक बड़ी ऊंची आग जला कर रखते थे लिहाज़ा तपा या तपां के नाम से मशहूर हो गए, चुनांचे अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मीर तपां के नाम से मशहूर चला आता है ।

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख निज़ाम नारनोई रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आगरा के मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के नज़्दीक मालो दौलत कुछ क़द्र ना रखता था, इस हाथ लेना उस हाथ देना आप रहमतुल्लाह अलैह की आदत थी और कमाले बातिनी से एक चीज़ को पलक झपकते एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुंचा देते थे, जब ज़ब्त पैदा हुआ तो आगरा में तशरीफ़ लाकर एक दरख़्त के नीचे नशिस्त गाह यानी बैठने की जगह इख़्तियार कर ली, चंद रोज़ के बाद उस दरख़्त की शाखें चारों तरफ़

से ऐसी बढ़ीं कि सूरज की धूप आप रहमतुल्लाह अलैह तक नहीं पहुँचती थी, आप रहमतुल्लाह अलैह के खिरक़े आदात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर हैं।

1019 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह दारुल फ़ना से दारुल बक्रा को तशरीफ़ ले गए, मज़ार मुबारक मुत्तसिल वज़ीरपुरा में एक बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है जिसके ऊपर इमली का एक बड़ा दरख़्त साया किए हुए है, ग़ालिबन येह वही दरख़्त है जिसका अभी ज़िक्र हुआ।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज 61.62)

तोता ताल लोहा मंडी

(5) शाह बरवी

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्ग हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुत्तसिल तोता ताल लोहा मंडी पक्की सड़क के किनारे निहायत बुलंदी पर वाक़ेअ है और लोगों में लाल सैय्यिद या लाल शहीद के नाम से मशहूर मारुफ़ हैं।

मज़ार की तावीज़ पर 971 हिजरी तारीख़ लिखी हुई है जिससे आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ का पता चलता है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज 88)

आबादी कस्साबान मुहल्ला सुल्तानपुरा

(6) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मालूम नहीं हो सका। मगर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का

मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी कस्साबान मुहल्ला सुल्तानपुरा में वाक़ेअ है, जिस से कुर्बो जवार के लोगों को बेहद अक़ीदत है, पहले मज़ार पर आलीशान गुंबद बना हुआ था, मिन जानिबे नुज़ूल पुराना होने की वजह से गिरा दिया गया और मज़ार के बजाये संगीन चबूतरे और कटहरा बना दिया गया है। (बोस्ताने अख्यार, पेज103)

मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा (आलम गंज, लोहामंडी)

(7) पीर बहाउद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर किसी तारीख़ व तज़िकरा की किताबों में मेरी नज़र से नहीं गुज़रा सिर्फ़ इस क़द्र पता चला है कि आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने में काबुल से आगरा में तशरीफ़ लाए थे।

मज़ार मुबारक मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा (आलम गंज, लोहामंडी) की मस्जिद में जो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नाम से मौसूम है ज़ियारत गाह खास व आम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज58)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब भी 'मस्जिद पीर बहाउद्दीन' के अंदर मौजूद है। मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी हुई है।

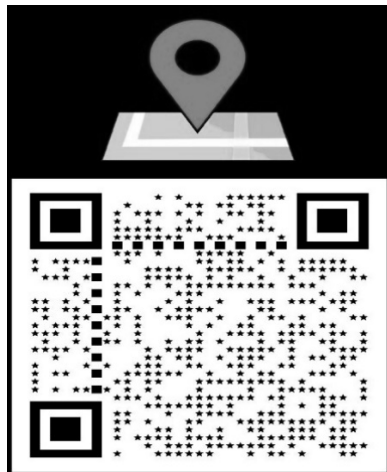
मज़ार की तावीज़ की तख़्ती पर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत बाबा पीर वहाबुद्दीन शाह रहमतुल्लाह अलैह चिश्ती कादरी लोहा
मंडी तेली पाड़ा आगरा, 17 रबीउस्सानी

लिखा हुआ है। आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम “बहाउद्दीन” की जगह गलती से “वाहबुद्दीन” लिख दिया गया है।

पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(8) बीबी जीवनी

आप रहमतुल्लाह अलैहा क्रौम की तेलिन यानी उस्मानी बिरादरी से तअल्लुक रखती थीं और निहायत आरिफ़ा कामिला थीं, शाह शौक्रा रहमतुल्लाह अलैहा से आप रहमतुल्लाह अलैहा को फ़ैज़ हासिल हुआ था।

29 रबीउस्सानी 1201 हिजरी ब मुताबिक़ 1786 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैहा ने रिहलत फ़रमाई, नवाब नजफ़ खां आप रहमतुल्लाह अलैहा का बहुत मोअतक्रिद था जिसने अपने अय्यामे हुकूमत में मौज़ रे पुरा जाट परगना फ़रह, ज़िला मथुरा आप रहमतुल्लाह अलैहा की ख़ानकाह के मसारिफ़ के वास्ते वक़फ़ किया था।

मज़ार मुबारक मुहल्ला आलमगंज लोहामंडी में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

जीवनी शाह मारिफ़त आई
 बूद साबित क़दम बराहे यक़ी
 चूँकि रिहलत नमूद अज़ आलम
 शुद अज़ां ख़ातिर जहां ग़मगीं
 हातिफ़े ग़ैब गुफ़्त तारीख़श
 जाए ऊ बाद दर बहिश्त बरीं

‘जाए ऊ बाद दर बहिश्त बरीं’ के अदद 1201 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैहा की वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज68.69)

(9) चांद बीबी

आप रहमतुल्लाह अलैहा बीबी जीवनी रहमतुल्लाह अलैहा की छोटी बहन हैं और अपनी बहन की तरह ज़माने की राबिया बसरिया थीं, आप रहमतुल्लाह अलैहा का मज़ार मुबारक अपनी बड़ी बहन बीबी जीवनी रहमतुल्लाह अलैहा के पहलू में वाक़ेअ है यानी आलमगंज आगरा में बना हुआ है, आप रहमतुल्लाह अलैहा की ख़ानकाह के अख़राजात के वास्ते भी नवाब नज़फ़ ख़ां ने एक सौ कई बीगा ज़मीन वफ़ा की थी। (बोस्ताने अख़्यार, पेज69)

(10) मौलाना मुहम्मद सआदत अली कादरी

आप रहमतुल्लाह अलैहा क़ाज़ी सैय्यिद महर अली (जिनका मज़ार मुबारक बोदला कदम रसूल के पास है इनका तज़िक़रा इस किताब में मौजूद है)के फ़र्ज़द यानी बेटे और सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह कादरी रहमतुल्लाह अलैहा (जिन का मज़ार पंजे मदरसा में मौजूद है) के मुरीदाने जानिसार में से थे, इल्म व फ़ज़ल से मौसूफ़ और बड़े आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग़ थे, मौजू तबअ और सईद तख़ल्लुस था, उर्दू फ़ारसी दोनों ज़बानों में आप रहमतुल्लाह अलैहा का कलाम

मौजूद और कुल्लियाते सईद के नाम से मौसूम है, जिसकी ज़ियारत का फख्र निगारिन्दए बोसताने अख्यार (यानी सईद अहमद मरहरवी) को हासिल है, तमाम तर उम्र दर्सो तदरीस का सिल्लिसला आप रहमतुल्लाह अलैह से जारी रहा।

1331 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 184)

मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा नौबस्ता आलमगंज में लोधों की आबादी (11) सैय्यिद बाक़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह अमल में यगाना ए आफ़ाक़ और निहायत साहिबे तक्वा और अहले करामत बुज़ुर्ग थे, 5 शव्वाल 1065 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ।

क़ताए तारीख़:

उम्दा ए दुनिया दर दीन व कुदवए कौनो मकां
क्रिबल ए अहले जहाँ व काबए अर्श आस्तां
मीर बाक़ी मुर्शिद आफ़ाक़ अज़ लुत्फे खुदा
चूँ अज़ीं दारे फ़ना शुद जानिबे क़स्से जिनाँ
साअते रोज़ व मह व साल विसालश अक़ल गुफ़्त
सुबह शंबा पंचुम शव्वाल बाक़ी दाद जां

मज़ार मुबारक मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा नौबस्ता आलमगंज में लोधों की आबादी के करीब एक मुख़्तसर हुज़रे में वाक़ेअ है जो 7 फ़ुट 10 इंच लंबा, 5 फ़ुट, 5 इंच चौड़ा और सिर्फ़ 4 फ़ुट बुलंद है।

आलमगंज (लोहामंडी)

(12) रौशन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के शुहदाए नामदार के ज़मुरे में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पागलखाने के इहाते की जुनूबी यानी दखिखन की जानिब की दीवार के करीब वाक़ेअ हैं, क़ुरबो जवार के लोगों को बहुत अक़ीदत है।

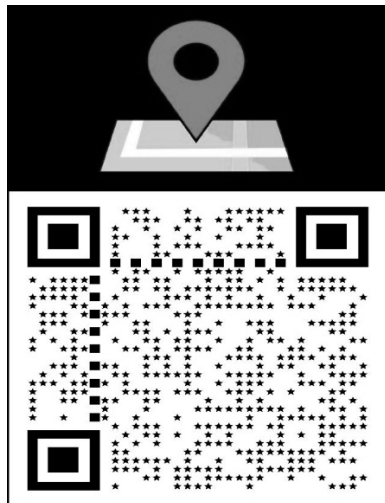
पुराने लोगों का बयान है कि अक्सर जुमेरात और जुमा के दर्मियानी रात को मज़ार से रौशनी शुरू हो कर गुमानी की मस्जिद तक जो थोड़े फ़ासले पर जंगल ही में वाक़ेअ है, जाया करती थी, ग़ालिबन उसी मुनासिबत से आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रौशन शहीद मशहूर है, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार 8 फुट ऊंचा, पक्के चबूतरे पर वाक़ेअ है जिस पर दो नीम और एक पीलू का दरख़्त साया किए हुए हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज80)

मौजूदा हालत 2025

रौशन शहीद रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक लोहामंडी के मुहल्ला आलमगंज में आंधी वालों के क़ब्रिस्तान में मौजूद है। येह जगह पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार और मस्जिद से तक्करीबन 500 मीटर की दूरी पर है। जाने का रास्ता मस्जिद पीर बहाउद्दीन के दरवाज़े से सीधे हाथ की तरफ़ वाले रास्ते से जाएं कुछ दूर चल कर गुमानी की मस्जिद आएंगी, गुमानी की मस्जिद से 100 मीटर की दूरी पर क़ब्रिस्तान का गेट आएगा, उस गेट से दाखिल हो कर तक्करीबन 100 मीटर क़ब्रिस्तान के अंदर जा कर चबूतरे में मज़ार मुबारक मौजूद है। पागलखाना की दीवार इस क़ब्रिस्तान से मिली हुई है।

मज़ार मुबारक पर मामूली छत है, लोहे के तार का दरवाज़ा है और नाम वगैरा की तख्ती नहीं है। अब मज़ार पर सिर्फ एक नीम का दरख्त बाक़ी है। रबीउल अव्वल की 27 और 28 तारीख को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मनाया जाता है।

रौशन शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को **Scan** कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



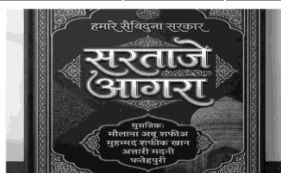
मुसन्निफ़ की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारुल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारुल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतेँ	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतेँ	हिन्दी	153
13	पाँच नमाज़ों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाज़ों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	कुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	कुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज़ उलूम	उर्दू	696
22	आसान फ़र्ज़ उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720

24	आसान खुत्बाते मुहर्म्म	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतेँ	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400
45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबान और शबे बराअत	उर्दू	50
48	शबान और शबे बराअत	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435

50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफ़ाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख़ साज़ शख़्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़्आलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मतु मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफ़ीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीक़िया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200
68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक्कहे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फ़लाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ़ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	गुलशने वजाइफ़	उर्दू	64
74	इप्तिखारे नक्रिय्यह अल मारुफ़ फ़र्ज़नदाने आगरा	उर्दू	300
75	खत्मे कुरआन की फ़ज़ीलत और मसाइल	उर्दू	32

76	सरताजे आगरा और 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
77	ताजगंज के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
78	लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	48
79	हींगमंडी और नाईमंडी के 17 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
80	सिकंदरा व अतराफ़ के 14 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
81	सराये ख्वाजा व अतराफ़ के 6 औलिया की सीरत	हिन्दी	32
82	शाहगंज व अतराफ़ के 13 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
83	बेलनगंज व अतराफ़ के 29 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	64
84	नई बस्ती व दीवान खाना के 8 औलिया की सीरत	हिन्दी	48
85	कब्रिस्तान पीर गीलानी के 5 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
86	कब्रिस्तान पंचकुइयां के 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
87	आगरा के गौस और 8 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
88	जमना पार आगरा के 12 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
89	मिर्जा खानदान के 4 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	32
90	तज़क्रकुरे विसाल औलिया का विसाल दर महीना व साल	उर्दु	514
91	हफ़ों के राज़	उर्दु	200



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे खुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
खानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते खुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की खाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की खाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औकात क्या बेखुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेखुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

फेहरिस्त

मुसन्निफ़ का तआरुफ़.....	3
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा	6
आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़	7
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	15
लोहामंडी के 12 औलियाए किराम की प्यारी सीरत.....	18
(1) अहमद शाह नक्रशबंदी	18
(2) यतीम शाह	19
(3) शैख़ अलहद्दाद कादरी	20
(4) अमीर तपां चिश्ती	20
(5) शाह बरवी	21
(6) अब्दुल्लाह	21
(7) पीर बहाउद्दीन	22
(8) बीबी जीवनी	23
(9) चांद बीबी	24
(10) मौलाना मुहम्मद सआदत अली कादरी	24
(11) सैय्यिद बाक़ी	25
(12) रौशन शहीद	26
मुर्त्तिब की किताबों का तआरुफ़	28